।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण

चैत्र कृ.१४ युगाब्द ५११९, वि.२०७४

१६ मार्च २०१८

वर्ष ३३ : अंक २३

**परम सुहृद पाठक-गण,
सप्रेम नमस्कार।**

युगाब्द ५१२०, वि.२०७५ की आप सभी को हार्दिक मंगलकामनायें

वर्ष प्रतिपदा (१८ मार्च) से भारतीय नववर्ष प्रारम्भ हो रहा है। यह वर्ष आप सभी के लिए सुख-समृद्धिदायक हो ऐसी ईश्वर से प्रार्थना है। इस वर्ष में आप समाज एवं राष्ट्र की गतिविधियों में अधिक से अधिक सहभागिता निभायें ऐसी आपसे आकांक्षा है।

पाथेय कण एवं आपके पत्रों के माध्यम से आपका और हमारा संवाद निरंतर बना रहे, इसी आशा के साथ

जय श्रीराम।

आपका
सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष ₹ 100/- पन्द्रह वर्ष ₹1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141-2529334

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

अभूतपूर्व राष्ट्रोदय

मेरठ में डेढ़ लाख स्वयंसेवकों का विराट समागम

मेरठ में गत २५ फरवरी को उस समय इतिहास लिखा गया जब नगर के जागृति विहार में संघ के डेढ़ लाख स्वयंसेवक पूरा गणवेश पहन कर एक साथ आये। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नब्बे वर्षों के इतिहास में यह अब तक का सबसे बड़ा समागम था। इसके पहले जन.२०१६ में पुणे में सवा लाख स्वयंसेवक एक स्थान पर इकट्ठे हुए थे। पूरी दुनिया में अनुशासनबद्ध लोगों का इतना बड़ा कार्यक्रम अब तक कहीं नहीं हुआ। कार्यक्रम की विशालता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि एक कि.मी. चौड़े तथा ढाई कि.मी. लम्बे मैदान में पूर्ण गणवेश पहने स्वंयसेवक पंक्तिबद्ध हो बैठे थे। जीप से कार्यक्रम स्थल की परिक्रमा करने में १५ मिनट का समय लग गया। मैदान में १०१ फीट ऊँचा भगवा ध्वज लहरा रहा था।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ, बिजनौर आदि चौदह जिलों से ये स्वयंसेवक आये थे। अमरीका के शिकागो नगर के संघचालक तथा तंजानिया के कुछ स्वयंसेवक विशेष रूप से कार्यक्रम देखने के लिये मेरठ पहुँचे थे। मंच पर संघचालक भागवत जी के साथ मुनि विहर्ष सागर जी महाराज तथा जूना अखाड़ा के प्रमुख अवधेशानंद गिरि जी भी थे। ६५० एकड़ क्षेत्र में फैले विशाल प्रांगण में उपस्थित विराट स्वयंसेवक-समूह को सम्बोधित करते हुए मुनि विहर्ष सागर जी ने 'सेव वॉटर'और 'सेव डॉटर'(पानी बचाओ और बेटी बचाओ) का संदेश दिया। स्वामी अवधेशानंद गिरि जी ने कहा कि दुनिया मार्गदर्शन के लिये भारत की ओर देख रही है। उन्होंने यह भी कहा कि मेरठ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और महाभारत का साक्षी रहा है।

एक किमी चौड़े और ढाई किमी लम्बे मैदान में स्वयंसेवक पंक्तिबद्ध हो बैठे थे। ध्वज की ऊँचाई १०१ फीट थी।

सरसंघचालक भागवत जी ने मंच पर आने से पहले एक जीप में पूरे मैदान की परिक्रमा की। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि देवता भी दुर्बल (बकरे) की बलि लेते हैं और उसका सम्मान नहीं करते। इसलिये शक्ति-सम्पन्न होना आवश्यक है। साथ ही बल का उपयोग दुर्बल की रक्षा में किया जाना चाहिये। विश्व में भारत की भूमिका को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण दुनिया अनेक प्रयोग कर चुकी है। इन प्रयोगों ने सुविधाएं तो दीं, लेकिन सुख-शांति नहीं दी। मनुष्य को श्रेष्ठता की ओर बढ़ाने वाला रास्ता विश्व नहीं खोज पाया है। इसलिये आज विश्व यह सोचने लगा है कि ऐसा सुख,शांति और श्रेष्ठता का मार्ग भारत ही दे सकता है। उन्होंने जोर दे कर कहा कि हिन्दू समाज एक हुआ तो भारत विश्व गुरु अवश्य बनेगा।

मेरठ के इस 'राष्ट्रोदय' समागम में बड़ी संख्या में संतों ने भी भाग लिया। इनमें से कई पिछड़े कहे जाने वाले बन्धुओं में से भी थे। ❑

**सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात एष धर्मः सनातनः।।**

सदा सच बोलना चाहिये पर सच यदि अप्रिय अर्थात् कष्ट पहुँचाने वाला हो तो नहीं कहना चाहिये। इसी के साथ अच्छा लगने वाला झूठ भी नहीं बोलना चाहिये। यही शाश्वत धर्म है।

जीवन में कुछ करना है तो शक्तिशाली बनो

किसी का असभ्य व्यवहार तथा धृष्टता भगिनि निवेदिता को क्रोधित कर देती थी। उनकी कोशिश रहती कि असभ्य आचरण करने वाले को उचित शिक्षा मिले ताकि भविष्य में वह अपने ऐसे आचरण की पुनरावृत्ति न करे। ऐसी ही एक घटना का वर्णन यहाँ करना समीचीन होगा।

गोकुलदास नाम का एक बाल कार्यकर्ता उद्बोधन कार्यालय में श्रीमाँ के दर्शन हेतु अपने बड़े भाई के साथ जाया करता था। उस समय भगिनि निवेदिता भी वहीं थी। श्रीमाँ के दर्शनों के पश्चात् गोकुल के बड़े भाई एवं भगिनि निवेदिता वहीं सीढ़ियों पर बैठकर कुछ आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा करने लगे। इसी बीच गोकुल उन दोनों के बीच में होते हुए दरवाजे तक गया और बाद में जब उसे पता चला कि वह अपना छाता कार्यालय में भूल आया है तो वह फिर से उनके बीच से होता हुआ गुजरा।

भगिनि निवेदिता को गोकुल का यह व्यवहार पसन्द नहीं आया। उसने भगिनि निवेदिता को यह कहते हुए सुना कि गोकुल के इस व्यवहार के लिए उसकी अच्छी पिटाई की जानी चाहिए।

जब भगिनि निवेदिता अंदर गई तो गोकुल के भाई ने उसको अपने पास बुलाया और कहा–*''भगिनि निवेदिता तुमसे बहुत नाराज हैं। जब दो बड़े बातें कर रहे हों तो उनके बीच से गुजरना असभ्यता समझी जाती है। तुम्हें उनके बीच से गुजरते वक्त*

विनम्रता से माफी मांगनी चाहिए थी।''

तब गोकुल विनीत स्वर में बोला–*'' मैंने जब देखा कि वे नाराज हो गई हैं तो मैं माफी मांगने ही वाला था पर जब मैंने पिटाई की बात सुनी तो मैं डर गया और उनके पास गया ही नहीं।''*

बड़े भाई यह सुनकर जोर से हँस पड़े और बोले *''पिटाई से उनका मतलब सचमुच ही तुम्हें मारना नहीं था। वे तो बस तुम्हें एक पाठ सिखाना चाहती थीं।''*

कुछ भी हो , बड़े होने पर भी गोकुल के मन से भगिनि निवेदिता के प्रति डर की भावना गई नहीं। वह कोशिश करता कि उसका आमना–सामना भगिनि निवेदिता से न हो। ऐसे ही एक दिन जब वह अपनी गली से गुजर रहा था तो उसे सामने से भगिनि निवेदिता आती दिखाई पड़ी। वह उनसे बचने के लिए एक अन्य गली में मुड़ने ही वाला था कि सामने निवेदिता आकर खड़ी हो गई और प्यार से गोकुल की पीठ थपथपाते हुए बोली–*''मुझसे नाराज मत हो। क्या मैं तुम्हारी बड़ी बहन नहीं? तुम कितने कमजोर हो गए हो। ज्यादा मत पढ़ा करो। मैदान में जाकर खेलो, व्यायाम करो। जब तक तुम शक्तिशाली नहीं बनोगे तब तक जीवन में कुछ नहीं कर पाओगे।''*

गोकुल को भगिनि निवेदिता की स्नेहभरी बातें सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ कि जिससे मैं इतना डरता था क्या यह वही महिला है? किसी के गलत व्यवहार पर भगिनि निवेदिता की इस प्रकार से समाधान–कारक प्रतिक्रिया होती थी। ❑

***–केदार चतुर्वेदी,** जयपुर*

आगामी पक्ष (१ से १५ अप्रेल २०१८) के विशेष अवसर

(वैशाख कृष्ण १ से १४ तक)

जन्मदिवस

४ अप्रेल (१८८९)–राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म दिवस

वैशाख कृष्ण ५ (इस बार ५ अप्रेल)– नवें गुरु तेगबहादुर की जयन्ती (वि.१६७८ सन् १६२१)

वैशाख कृष्ण ७ (इस बार ७ अप्रेल)– पांचवें गुरु अर्जुनदेव की जयन्ती (वि.१६२०, सन् १५६३)

वैशाख कृष्ण १०(इस बार १० अप्रेल)– ५वें तीर्थंकर सुमति नाथ की जयन्ती

११ अप्रेल (१८२७)– महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती

वैशाख कृष्ण ११ (इस बार १२ अप्रेल)– वल्लभाचार्य जयन्ती

१४ अप्रेल (१८९१)– बाबा साहब अम्बेडकर की जयन्ती

महत्वपूर्ण घटनायें

६ अप्रेल (१६६३)– शिवाजी महाराज ने पूना के लाल महल में डेरा डाले शायस्ता खान पर आक्रमण कर उसे भागने पर मजबूर किया।

८ अप्रेल (१९२९)– दिल्ली असेम्बली में भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त ने बम धमाका किया

१३ अप्रेल (वैशाखी)– गुरु गोबिन्द सिंह ने आनन्दपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना की। (१६९९)

–जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड (१९१९)

१४ अप्रेल (१९४४)– नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज ने मणिपुर से भारत में प्रवेश कर मोइरांग पर तिरंगा फहराया।

पुण्यतिथि

४ अप्रेल (१९४६) – सागर मल गोपा की शहादत

८ अप्रेल (१८५७) – प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में मंगल पाण्डे की शहादत

११ अप्रेल (१८५८) –प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में वीर खाज्या एवं दौलत सिंह नायक का बलिदान दिवस

स्वामी जयेन्द्र सरस्वती ने महासमाधि ली

कांची कामकोटि पीठ के पूज्य शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज ने गत २८ फरवरी को प्रातः महाप्रयाण कर दिया। वे ८३ वर्ष के थे तथा वर्ष १९५४ से कांची पीठ में थे। उनके उत्तराधिकारी स्वामी विजयेन्द्र सरस्वती अब इस शंकर-पीठ के पीठाधिपति बने हैं।

दिवंगत स्वामी जी का जन्म १३ जुलाई १९३५ के दिन इरुलन्निकी (जिला तिरुवरूर, तमिलनाडु) में हुआ था। उनके पिताश्री महादेव अय्यर थे तथा माता का नाम सरस्वती था। उनका नाम सुब्रह्मण्यम रखा गया। १३ वर्ष के आयु में उन्हें कांची मठ के शंकराचार्य के उत्तराधिकारी के रूप में चुना गया। इसके बाद की उनकी शिक्षा भी उसी के हिसाब से हुई। उन्नीस वर्ष की आयु में सन्यास लेकर २२ मार्च १९५४ को वे कांची काम-कोटि पीठ में आ गये। तत्कालीन शंकराचार्य स्वामी चन्द्रशेखर सरस्वती जी ने उन्हें सन्यास की दीक्षा दी।

इसके बाद मठ में रहते हुए स्वामी जयेन्द्र सरस्वती ने सत्रह वर्षों तक वेद, उपनिषद, पुराण आदि का विस्तार से अध्ययन किया। संस्कृत भाषा पर उनका असाधारण अधिकार था। इसके अतिरिक्त तमिल, तेलगू, हिन्दी तथा अंग्रेजी को भी वे धाराप्रवाह रूप से पढ़ बोल और लिख सकते थे। अपना अध्ययन पूरा कर वे पद-यात्रा पर निकल पड़े। लगभग दस वर्षों तक उन्होंने पूरे देश की यात्रा की और नेपाल भी गये। १९८०-८१ में उन्होंने पीठ का पूरा दायित्व सम्भाल लिया, क्योंकि उनके गुरु स्वामी चन्द्रशेखर एकान्तवास में चले गये थे।

कांची मठ के अधिपति रहते हुए पूज्य स्वामीजी ने जन-जागरण और समाज-सेवा पर ध्यान केन्द्रित किया। उनके समय कई विद्यालयों तथा उच्च-कोटि के अस्पतालों का निर्माण हुआ। चेन्नै का प्रसिद्ध 'शंकर-नेत्रालय' स्वामीजी के प्रयास से ही प्रारम्भ हुआ। जयपुर सहित देश के अनेक महानगरों में भी शंकर नेत्रालय शुरु हो गये हैं।

बीती २८ फर. को प्रातःकाल की पूजा समाप्त करने के बाद उन्हें सांस लेने में कठिनाई होने लगी। इसी के साथ उन्होंने महासमाधि ले ली।

दक्षिण की काशी कांचीपुरम्- तमिलनाडु की राजधानी चैन्नै से दक्षिण-पश्चिम में चालीस कि.मी.की दूरी पर कांचीपुरम स्थित है। इसे कांचीवुरम् भी कहा जाता है और यह दक्षिण की काशी के रूप में प्रसिद्ध है। इस नगरी में भगवान शिव शंकर के १०८ मंदिर हैं। पहले यह पल्लव वंश की राजधानी भी रहा है। आचार्य शंकर इस नगरी में काफी समय तक रहे थे। इसीलिये कांची को भी जगद्गुरु शंकराचार्य की पीठ माना जाता है। बद्रीनाथ, पुरी, द्वारिका तथा शृंगेरी के समान ही कांची-पीठ की भी प्रतिष्ठा है। स्वामी जयेन्द्र सरस्वती इस पीठ के ६९

वें शंकराचार्य थे। पूज्य स्वामी विजयेन्द्र सरस्वती इसके सत्तरवें अधिपति हैं।

प्राचीन काल से ही कांची नगरी शैव, वैष्णव, जैन व बौद्ध मतावलम्बियों की तीर्थ-स्थल रही है। पुराणों के अनुसार ब्रह्मा जी ने यहाँ तपस्या की थी। नागार्जुन, बुद्धघोष, दिङ्.नाग आदि बौद्ध विद्वानों ने यहीं रह कर ज्ञान-साधना की। जिनके जन्म के एक हजार साल पूरे होने के समारोह पिछले दिनों मनाये गये थे ऐसे श्री रामानुजाचार्य ने भी कांची में ही साधना की। इस नगरी के दो भाग हैं शिवकांची तथा विष्णुकांची। शिवकांची में स्थित काली मन्दिर अखण्ड भारत में फैले बावन शक्तिपीठों में से एक है। यहाँ सती का कंकाल गिरा था। ❑

सरसंघचालक जी की श्रद्धांजलि

कांची कामकोटि पीठ के पू.जगद्गुरु शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वती जी महाराज ने एक अत्यन्त तेजस्वी एवं ओजस्वी जीवन पूर्ण किया और अब उनकी पवित्र आत्मा का शिवत्व में सायुज्य हुआ है। आद्य शंकराचार्य की परंपरा के अनुसार हिन्दू समाज के जीवन में किसी भी कारण से आ रही कुरीतियों के निवारण एवं दुर्बल वर्ग की उन्नति के लिए बहुविध सेवा कार्यों हेतु वे अपनी विलक्षण क्षमता और अद्भुत संकल्प शक्ति से जीवनभर समर्पित रहे।

अपने सनातन वैदिक दर्शन और वैदिक संस्कृति को युगानुकूल प्रतिष्ठापित करते हुए समस्त हिन्दू समाज को सभी दृष्टि से दोषमुक्त तथा सामर्थ्यवान करने के लिए उन्होंने सफल प्रयत्न किये। अब वे पार्थिव शरीर से हमारे मध्य नहीं हैं किन्तु उनकी प्रेरणादायी स्मृतियाँ समस्त हिन्दू समाज को निरंतर उर्ज्वस्वित करती रहेंगी।

रा.स्व.संघ की ओर से शंकराचार्य परंपरा की महान् ज्योति के परमात्मा में विलीन होने पर हम अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

सुरेश (भैय्या) जोशी
(सरकार्यवाह)

मोहन भागवत
(सरसंघचालक)

विज्ञान दिवस पर वैज्ञानिकों ने कहा

पूरी दुनिया को विज्ञान भारत ने ही दिया

मुम्बई के भारतीय तकनीकी संस्थान (आई आई टी) में भौतिक विज्ञान पढ़ाने वाले डा.के.राम सुब्रह्मण्यम ने कहा है कि विज्ञान की शुरुआत और विकास भारत में ही हुआ। यूरोप के विद्वानों ने भारत से ही विज्ञान सीखा। अन्य प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने भी डा. सुब्रह्मण्यम का समर्थन किया है। इन विद्वानों के अनुसार कम से कम साठ हजार साल पहले भारत के लोगों को गणित की पूरी जानकारी थी।

वेदों का विज्ञान– दिल्ली के **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र** ने प्राचीन भारत के विज्ञान की शोध का काम शुरु किया है। देश के प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों (आईआईटी) में कार्यरत विभिन्न विषयों के वैज्ञानिकों की सेवाएं इसके लिये ली गई हैं। डा.राम सुब्रह्मण्यम के अतिरिक्त डा. एन.जी.डोगरा, डा.सुन्दर नारायण झा, डा. प्रज्ञा भारती, डा.एस.बी.काले, डा. दुबे, डा.जी.कुरूप सहित अनेक वर्तमान व पूर्व के शिक्षक उक्त काम में लगे हैं। अपने–अपने विषयों के ये सभी विद्वान सापेक्षवाद, परमाणु–विज्ञान, रसायन विज्ञान, आनुवांशिकी विज्ञान (जेनेटिक्स),माइक्रोबायोलोजी, चिकित्सा–विज्ञान आदि से सम्बन्धित वेदों में आये सूत्रों को खोजने में जुटे हुए हैं। २८फरवरी का दिन अपने देश में **विज्ञान दिवस** के रूप में मनाया जाता है। उक्त विद्वानों ने विज्ञान दिवस की पूर्व संध्या पर गत २७ फरवरी को पत्रकारों को सम्बोधित किया तथा 'वेदों में विज्ञान' के कुछ उदाहरण बताये।

डा.राम सुब्रह्मण्यम ने बताया कि कृष्ण यजुर्वेद में 'अपरिमित' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसको आधुनिक गणित में इन्फिनिटी कहा जाता है। उन्होंने कहा कि अंक गणित, बीज गणित, ज्यामिती, त्रिकोणमिति और भौतिकी के सारे सिद्धान्त प्राचीन वेदों में मौजूद हैं। आधुनिक सिविल इंजीनियरिंग के गूढ़ सूत्र वेदों में मिलते हैं और सीमेंट बनाने की विधि भी समझाई गई है।

गीता पढ़ कर परमाणु विज्ञान समझा– तकनीकी संस्थान मद्रास के प्रोफेसर डा. वेणुगोपालाचार्य ने बताया कि **सिद्धान्त शिरोमणि** ग्रन्थ में गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त विस्तार से समझाया गया है। यह ग्रन्थ न्यूटन के जन्म से सैकड़ों साल पहले लिखा गया था। पत्रकारों को उन्होंने जानकारी दी कि परमाणु वैज्ञानिक राबर्ट ओपन हाइमर गीता को पढ़ कर ही परमाणु विज्ञान को समझ सके थे। ओपन हाइमर ने स्वयं यह कहा था। जब उन्होंने अमरीका में पहला परमाणु परीक्षण किया तो उन्होंने तुरंत गीता का एक श्लोक पढ़ा। इस श्लोक में योगेश्वर श्रीकृष्ण के विराट स्वरूप का वर्णन है।

डा. वेणुगोपाल के अनुसार **अन्तर्ध्यान** हो जाने का जिक्र हमारे धर्मग्रन्थों में बार–बार आता है। इसे आधुनिक वैज्ञानिकों ने **'बायोलोजिकल ट्रांसपोर्टेशन'** नाम दिया है। बड़े–बड़े वैज्ञानिक इस पर शोध कर रहे हैं। '**त्रिआयामी हालोग्राफ**' भी प्रकट होने और अन्तर्ध्यान हो जाने का ही एक रूप है।

वेदों में डी.एन.ए.–आनुवांशिकी विज्ञान (जेनेटिक्स) के विद्वान डा.एस.बी.काले बताते हैं कि डी.एन.ए. का पहला उल्लेख वेदों में ही मिलता है। उन्होंने इसके प्रमाण स्वरूप निम्न श्लोक भी सुनाया–

असपिण्डाच चा मातुरसगोत्राच या पितुः। सा प्रशस्ता द्विजातीनां दार कर्मणि मैथुने मनु।।

उनके अनुसार मानव के बनावटी अंग या किसी दूसरे का अंग लगाने का जो प्रयास आज के चिकित्सा वैज्ञानिक कर रहे हैं, उसका विस्तृत विवरण वेदों व अन्य ग्रन्थों में है।

भा.त.सं.(आई.आई.टी.) मद्रास के गणित के प्रोफेसर डा.पी.अच्युतन ने जानकारी दी, कि अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर परमाणु विज्ञान तक की आधुनिक तकनीक का पूरा विवरण वेदों और गीता में है। उन्हें ठीक से समझ कर उन पर शोध किये जाने की आवश्यकता है। ❑

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

यहाँ अपने देश के इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति सम्बन्धी दस प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दें और परीक्षा करें कि अपने देश और संस्कृति के बारे में आप कितना जानते हैं?

१. लंकापति रावण ने सीता–माता को लंका में किस स्थान पर रखा?

२. महारथी कर्ण का पालन करने वाली माता का क्या नाम था?

३. विश्व का सबसे बड़ा मन्दिर अंगकोरवाट किस देश में है?

४. बिहार प्रदेश में गंगा में मिल जाने वाली गण्डकी नदी कहाँ से निकलती है?

५. वर्तमान में चल रहे वैवस्वत मन्वन्तर की अब तक कितनी चतुर्युगी बीत चुकी हैं?

६. सीसा बनाने की विधि तथा इसके गुण किस प्राचीन भारतीय पुस्तक में बताये गये हैं?

७. किस भारतीय सम्राट के शासन काल में मेगस्थनीज यूनान का राजदूत बन कर आया था?

८. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक नाना साहब पेशवा का निवास स्थान कहाँ था?

९. चित्तौड़ के तीसरे साके में वीरगति प्राप्त कर कौन वीर योद्धा लोक–देवता बन गया?

१०. प्रसिद्ध क्रांतिकारी रास बिहारी बोस की ढाल बन जापान में उनकी रक्षा करने वाली कौन थीं?

(उत्तर इसी अंक में हैं)

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी – अशोक वाटिका, राधा, कम्पूचिया (कम्बोदिया), दामोदर कुण्ड–नेपाल, सत्ताईस, शतपथ ब्राह्मण, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, बिठूर, कल्ला जी राठौड़, तोसिको बोस

जन्म दिन २१ मार्च पर विशेष

महान वैज्ञानिक आर्यभट्ट

१९ अप्रेल १९७५ के दिन भारत ने पहला उपग्रह अंतरिक्ष में भेज कर इतिहास बनाया था। इस कृत्रिम उपग्रह को **आर्यभट्ट** नाम दिया गया। कौन थे ये आर्यभट्ट?

आर्यभट्ट गणित और खगोल शास्त्र के महान् विद्वान थे। उन्होंने हजारों वर्षों पहले लिखे गये सूर्य सिद्धांत, वशिष्ठ सिद्धान्त, पितामह सिद्धान्त आदि ग्रन्थों में बताये गये गणित और खगोल विज्ञान के सूत्रों का गहराई से अध्ययन किया। तत्पश्चात इन सभी सिद्धान्तों को नये एवं क्रमबद्ध तरीके से अपने ग्रन्थ '**आर्यभट्टीय**' में प्रस्तुत किया। उनके लगभग सवा सौ वर्षों के बाद आर्यभट्ट नाम के एक और वैज्ञानिक हुए जिन्होंने पूर्ववर्ती आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में कुछ नये विषय और जोड़े। उनका ग्रन्थ **महाआर्यभट्टीय** भी गणित और खगोलशास्त्र की अमूल्य निधि है।

आर्यभट्टीय की रचना– आर्यभट्ट (प्रथम) का जन्म २१ मार्च सन् ४७६ को कुसुमपुर में हुआ। तब मगध की राजधानी पाटलिपुत्र को कुसुमपुर भी कहा जाता था। मगध में उस समय प्रसिद्ध गुप्त वंश के कुमारगुप्त (तृतीय) का शासन था। महाराज कुमारगुप्त आर्यभट्ट का बड़ा सम्मान करते थे और राज दरबार में उनके लिये विशेष स्थान तय कर रखा था।

प्राचीन काल से वेदों के एक उपांग 'ज्योतिष' की पढ़ाई गुरुकुलों में होती आ रही थी। आर्यभट्ट ने भी ज्योतिष का विस्तृत अध्यन किया। खगोल विज्ञान और गणित ज्योतिष के आवश्यक अंग हैं। आर्यभट्ट ने दोनों का ज्ञान प्राप्त करने के बाद उन्हें सरल एवं अधिक ग्राह्य बनाने की जरूरत समझी। इसी के बाद उन्होंने 'आर्यभट्टीय' की रचना की। इस महान् ग्रन्थ में उन्होंने स्पष्ट किया कि सौरमण्डल के सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। पृथ्वी भी सूर्य के चक्कर लगाने के साथ अपनी धुरी पर भी लगभग साठ घटी (२४घंटे) में एक बार घूम जाती है।

गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त – आर्यभट्ट ने यह भी बताया कि सभी ग्रह परस्पर गुरुत्वाकर्षण के कारण एक निश्चित कक्षा (मार्ग) में सूर्य का चक्कर लगाते हैं। इसी के साथ उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण वस्तुएं पृथ्वी की ओर गिरती हैं।

कापरनिकस ने सोलहवीं शताब्दी के शुरु में यह बताया था कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है और न्यूटन ने उसके सौ सालों बाद गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त बताया। दोनों से हजार साल पहले आर्यभट्ट ने दोनों बातों का उल्लेख अपनी पुस्तक में किया है।

विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न आर्यभट्ट ने सभी ग्रहों का स्वरूप, सूर्य-परिभ्रमण का समय, तिथियाँ, संवत्सर तथा कल्प तक की कालगणना का वर्णन आर्यभट्टीय के दूसरे खण्ड कालक्रियापाद में किया है। तीसरे खण्ड 'गोलपाद' में विस्तार से खगोल विज्ञान की जानकारी दी गई है।

पाई का सटीक मान– उक्त ग्रन्थ का प्रथम खण्ड 'गणितपाद' सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। गणित सभी विज्ञानों का आधार है और इस खण्ड में अंक, बीज और रेखागणित के साथ-साथ त्रिकोणमिति, कोर्डिनेट ज्यामेट्री और केल्कुलस के भी सूत्र बताये गये हैं। इनडिटर्मिनेट ईक्वेशन्स (अनिर्दिष्ट समीकरण) तथा साइन टेबिल भी इसमें दिये गये हैं।

गणित में ' π '(पाई) का प्रयोग हर जगह होता है। इसका मान २२/७ है। आर्यभट्ट ने पाई का एकदम सही मान आर्यभट्टीय में बताया है। 'चतुरधिकम्...'श्लोक के अनुसार ६२५३२ परिधि वाले वृत्त में उसके व्यास (२०,०००) का भाग देने पर π का मान प्राप्त होता है। यह मान ३.१४१६ आता है, जो सही मान है।

चौहत्तर वर्षों तक ज्ञान साधना करने के बाद सन् ५५० में उन्होंने महाप्रयाण किया। ❑

पंचांग- वैशाख (कृष्ण पक्ष)

युगाब्द-५१२०, विक्रमी-२०७५, शाके-१९४०

(१ से १६ अप्रेल २०१८ तक)

चतुर्थी व्रत-३ अप्रेल, **बूढ़ा बास्योड़ा**- ६ अप्रेल, **पंचक**-११ अप्रेल (मध्याह्न १२.३७ बजे) से १५ अप्रेल (प्रातः ४.०५ बजे) तक, **एकादशी**- १२ अप्रेल, **प्रदोष** -१३ अप्रेल, **पितृकार्य अमावस्या**-१५ अप्रेल, **देवकार्य अमावस्या**-१६ अप्रेल

चन्द्रमा - १ अप्रेल **कन्या**, २-३ अप्रेल **तुला**, ४ से ६ अप्रेल नीच की राशि **वृश्चिक** में, ७-८ अप्रेल **धनु**, ९ से ११ अप्रेल **मकर**, १२-१३ अप्रेल **कुंभ**, १४-१५ अप्रेल **मीन** तथा १६ अप्रेल **मेष** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

वैशाख कृष्ण पक्ष में वक्री **गुरु** व **शनि** तथा **राहु** व **केतु** पूर्ववत क्रमशः तुला व धनु तथा कर्क व मकर राशि में रहेंगे। इसी प्रकार **मंगल** तथा **शुक्र** क्रमशः धनु तथा मेष राशि में यथावत बने रहेंगे। **सूर्य** १४ अप्रेल को प्रातः ८.१३ बजे मीन से मेष राशि में प्रवेश करेंगे। वक्री **बुध** १५ अप्रेल को दोपहर २.५२ बजे मीन राशि में रहते हुये मार्गी होंगे।

अद्‌भुत भारत– महान भारत

उत्तर से दक्षिण तक एक सीधी रेखा में हैं ये शिव मंदिर

भारत के सुदूर उत्तर में केदारनाथ ज्योतिर्लिंग हैं और दक्षिणी सिरे पर रामेश्वरम् का ज्योतिर्लिंग हैं। बीच में तीन प्रसिद्ध शिवमंदिर हैं, तेलंगाना प्रदेश में कालेश्वरम्, आंध्र प्रदेश में कालहस्ति तथा तमिलनाडु में एकंबरेश्वर। आश्चर्य की बात यह है कि ये पाँचों पवित्र शिवलिंग एक सीधी रेखा में है। पाँचों स्थानों के रेखांश ७९ अंश (पूर्व) हैं अर्थात् लंदन के पास से निकलने वाली 'ग्रीनविच लाइन' के ७९ अंश पूर्व में ये पाँचों तीर्थ–स्थल हैं।

ये पाँचों मन्दिर पंचभूतों, जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश का प्रतिनिधित्व करते हैं। कालेश्वरम् मन्दिर तेलंगाना के करीम नगर जिले में हैं तथा गोदावरी के किनारे स्थित है। श्री कालहस्तीश्वर महादेव आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुपति के पास कालहस्ति कस्बे में ही है। यहाँ शक्तिपीठ भी है जहाँ सती का दायाँ कंधा कट कर गिरा था। एकंबरेश्वर महादेव दक्षिण की काशी कांची में हैं। ये सभी मन्दिर चार हजार वर्ष से भी अधिक पहले के हैं। केदारनाथ और रामेश्वरम् की बीच दूरी २३८३ कि.मी. है। इतनी दूरी पर **आज से पाँच हजार साल पहले एक सीधी रेखा में मंदिर निर्माण एक आश्चर्य ही है।**

इन मन्दिरों की आकृति भी ऐसी है कि पाँचों मन्दिर एक दूसरे से जुड़े हुए तथा परस्पर पूरक प्रतीक होते हैं।

होली पर डाक टिकट

गुयाना (दक्षिण अमेरिका) एक मात्र ऐसा देश है जिसने भारतीय पर्व होली पर डाक टिकट जारी किये।

विचार

गौर वाक्यम् जनार्दनम्

जब देश पर अंग्रेजों का शासन था तो एक वाक्य बोला जाता था-साहब वाक्यम् जनार्दनम्। इसका अर्थ है- अंग्रेज साहब ने जो कह दिया वह भगवान के कहे समान है। अपने देश के ज्यादातर ज्ञानीजन, अंग्रेजी अखबारों के पत्रकार और सेकुलरवादी लोग आज भी उक्त सिद्धान्त को मानते हैं। गोरे आदमी अर्थात् यूरोप और अमरीका के किसी व्यक्ति ने कुछ कह दिया तो इन लोगों के लिये वह भगवान के कहे समान हो जाता है।

पिछले दिनों केन्द्र सरकार के मानव संसाधन राज्यमंत्री डा.एस.पी.सिंह ने डार्विन के सिद्धान्त को गलत बताया। चार्ल्स डार्विन ने बताया था कि मनुष्यों के पूर्वज बन्दर थे और बन्दर से मनुष्य के रूप में क्रमिक विकास हुआ। भारत के उक्त श्रेणी के लोग इसे भी ब्रह्मवाक्य मानते थे। इसलिये सारे ज्ञानी तथा अंग्रेजी पत्रकार मंत्री जी के पीछे पड़ गये। सचाई यह है कि मंत्री महोदय स्वयं विज्ञान के विद्यार्थी रहे हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे पुलिस सेवा में चले गये। २०१४ में वे मुम्बई के पुलिस कमिश्नर थे तथा त्यागपत्र देकर उन्होंने बागवत से लोक-सभा चुनाव लड़ा था।

डार्विन ने एक सिद्धांत रखा था जिसमें संशोधन की स्थिति हमेशा रहेगी। भारत में दस अवतार माने गये हैं। पहला अवतार मत्स्य (मछली), फिर कछुआ (कच्छप), वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, श्रीकृष्ण, गौतम बुद्ध और कल्कि। मत्स्य से लेकर वामन तक पाँच अवतार मनुष्य के क्रमिक विकास की कहानी ही बताते हैं। शेष चार मनुष्य के गुण-सम्पन्न होने के क्रमिक विकास को बताते हैं।

देखा जाये तो मनुष्य क्रमिक विकास का दशावतार का सिद्धान्त डार्विन के विकासवाद से अधिक तर्कसंगत है।

इसी तरह न्यूटन ने गति के जो तीन नियम बताये थे वे भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, आर्यभट्ट, वराहमिहिर आदि आचार्यों के ग्रन्थों में मिलते हैं। इनके ग्रन्थ उपलब्ध भी हैं, ग्रन्थों के श्लोक प्रमाण के रूप में हैं फिर भी ज्ञानी-बिरादरी मानने को तैयार नहीं है। यह अंध-श्रद्धा है, गोरे की बात को पत्थर की लकीर मानने का परिणाम है, स्वाभिमान-शून्यता की पराकाष्ठा है और पूरी तरह विज्ञान-विरोधी दृष्टिकोण है।

यदि न्यूटन के सिद्धांतों पर सवाल नहीं खड़ा किया जाता तो आइंस्टीन सापेक्षवाद का सिद्धांन्त नहीं दे पाते। विज्ञान सिद्धान्तों पर सवाल खड़ा करना ही सिखाता है।

बालक राजेन्द्र का आत्मविश्वास

विद्यालय में प्राचार्य एक-एक करके सभी विद्यार्थियों का परीक्षा परिणाम बता रहे थे। जब सभी छात्रों का परिणाम बता दिया गया तो एक विद्यार्थी खड़ा हुआ और विनम्रतापूर्वक बोला- *'' महोदय, आपने मेरा परिणाम तो बताया ही नहीं।''* प्राचार्य ने विद्यार्थियों की सूची पर एक नजर डाली और बोले- *'तुम्हारा नाम इस सूची में नहीं है, बेटे।'*

'ऐसा नहीं हो सकता।'-विद्यार्थी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ यह कहा तो प्राचार्य भी एक बार सोच में पड़ गये। वे बोले-'बेटा तुम इस बार सफल नहीं हुए हो।' तब वह विद्यार्थी बोला- *''महोदय, निश्चित ही मेरा नाम लिखते समय रह गया होगा...। ''*

उसकी इस बात पर अनुशासनप्रिय प्राचार्य एकदम क्रोधित हो उठे- *'' अजीब हठीला लड़का है। देखो मैं आखिरी बार कहता हूँ कि तुम उत्तीर्ण नहीं हुए हो और यदि अब तुम पुनः बोले तो मैं तुम पर जुर्माना करूँगा।''*

''लेकिन श्रीमान्, मैंने सभी पर्चे ठीक किए थे। मेरे विफल होने का सवाल ही नहीं।'' बालक ने दृढ़ स्वर में जवाब दिया।

''ठीक है, तुम मेरी बात नहीं मान रहे हो इसलिए तुम्हारे ऊपर पाँच रुपये का जुर्माना किया जाता है।''-प्राचार्य कठोर स्वर में बोले। पर इससे भी वह बालक विचलित नहीं हुआ और कहता ही रहा कि वह अनुत्तीर्ण नहीं हो सकता।

दूसरी ओर प्राचार्य का क्रोध बढ़ने के साथ-साथ जुर्माने की राशि भी बढ़ती जा रही थी। पाँच रुपये की राशि बढ़कर पचास रुपये तक जा पहुँची। तभी कार्यालय से एक कर्मचारी दौड़ा-दौड़ा आया और बोला -*'' महोदय यह छात्र ठीक कहता है। इसका नाम सफल विद्यार्थियों की सूची में लिखने से छूट गया था। इसने तो पूरे विद्यालय में सर्वोच्च अंक पाये हैं।''*

यह सुनकर प्राचार्य ने बालक की पीठ थपथपाई और बोले- *''शाबास बेटे! मैं तुम्हारा आत्मविश्वास देखकर प्रसन्न हूँ।''*

इस बालक का नाम था राजेन्द्र प्रसाद जो बाद में भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने। ❑

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं ?

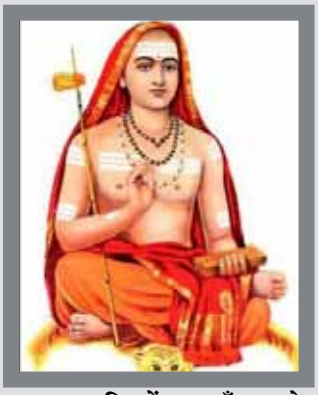

बाल मित्रों! यहाँ हमारे एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

आपका जन्म केरल प्रांत के कालड़ी ग्राम में हुआ था।

आपने भारतवर्ष में चार पीठों की स्थापना की जो भारत की एकता की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उन्होंने केवल ३२ वर्ष की आयु में समाधि ली। इस अल्प समय में पूरे देश को उन्होंने जाग्रत कर दिया।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों, अपने देश में सात पर्वत ऐसे हैं जो पवित्र माने जाते हैं। इनके नाम हैं- **हिमालय, अरावली, विंध्याचल, सह्याद्रि, रैवतक, मलयगिरि तथा महेन्द्रगिरि।** नीचे इन्हीं से सम्बन्धित दस प्रश्न दिये गये हैं। दिये गये चार सम्भावित उत्तरों में से आपको सही उत्तर का चुनाव करना है।

१. छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रमुख दुर्ग किस पर्वत श्रृंखला में हैं ?
(अ) सह्याद्रि (ब) हिमालय (स) गिरनार (द) नीलगिरि

२. सह्याद्रि पर्वतमाला किस प्रदेश से गुजरती है ?
(अ) गुजरात (ब) महाराष्ट्र (स) मध्य प्रदेश (द) उत्तर प्रदेश

३. गुजरात में स्थित पवित्र रैवतक पर्वत का प्रचलित नाम क्या है ?
(अ) अरावली (ब) सतपुड़ा (स) नीलगिरि (द) गिरनार

४. नगाधिराज किस पवित्र पर्वत को कहा जाता है ?
(अ) हिमालय (ब) नीलगिरि (स) मलयगिरि (द) सतपुड़ा

५. कर्नाटक प्रदेश से कौन सा पर्वत सम्बन्धित है ?
(अ) विंध्य (ब) महेन्द्रगिरि (स) मलयगिरि (द) रैवतक

६. ओडीसा (उत्कल) में स्थित वह पवित्र पहाड़ कौन सा है जो भगवान परशुराम की लीला स्थली माना जाता है ?
(अ) नीलगिरि (ब) महेन्द्र (स) सतपुड़ा (द) पीर पांजाल

७. कौन सा पर्वत भारत में नहीं है ?
(अ) हिन्दुकुश (ब) हिमालय (स) ब्रह्मगिरि (द) नीलगिरि

८. चन्दन के पेड़ों के लिये प्रसिद्ध पवित्र पर्वत श्रृंखला कौन सी है ?
(अ) सह्याद्रि (ब) अरावली (स) मलयगिरि (द) नीलगिरि

९. भारत के मध्य में स्थित पवित्र पर्वत-माला कौन सी है ?
(अ) गिरनार (ब) विंध्याचल (स) अरावली (द) सह्याद्रि

१०. कौन सी पवित्र पर्वत श्रृंखला महाराणा प्रताप की कर्मभूमि रही ?
(अ) विंध्याचल (ब) ब्रह्मगिरि (स) हिमालय (द) अरावली

(उत्तर इसी अंक में हैं)

महापुरुष पहचानो - आदि शंकराचार्य

बाल प्रश्नोत्तरी १.अ, २.ब, ३.द, ४.अ, ५.स ६. ब,७. अ, ८.स, ९.ब,१०.द

संघ की प्रतिनिधि सभा की बैठक नागपुर में सम्पन्न

भैया जी जोशी का सामाजिक समरसता का आह्वान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रतिनिधि सभा को सम्बोधित करते हुए सरकार्यवाह भैया जी जोशी ने समाज को तोड़ने वालों से सावधान रहते हुए समाज में समरसता तथा एकात्मता बनाये रखने का आह्वान किया। गत ९ मार्च को नागपुर में अ.भा.प्र.स. के समक्ष गत एक वर्ष का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में समाज में विभेद उत्पन्न करने वाली शक्तियाँ सक्रिय हो रही हैं। ये ताकतें समाज के विभिन्न वर्गों में वैमनस्य उत्पन्न करने का प्रयास कर रही हैं और हिंसक उपद्रवों से सार्वजनिक सम्पत्ति को नुकसान कर रही हैं। इन परिस्थितियों में संयम कुशलता और परिश्रम से कार्य करते हुए समाज संगठन का कार्य करते रहना है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा संघ की सर्वोच्च नियामक संस्था है। पूरे देश के चुने हुए प्रतिनिधि इसमें होते हैं। प्रांत संघचालक, कार्यवाह, प्रचारक तथा इनसे अधिक दायित्ववान कार्यकर्ता भी इसके सदस्य होते हैं। विभागों के पदाधिकारियों तथा समान विचार वाले संगठनों के कुछ प्रमुख कार्यकर्ता इसमें आमंत्रित किये जाते हैं। वर्ष में एक बार, अधिकतर मार्च माह में इसकी बैठक होती है। प्रत्येक तीन वर्ष में संघ में चुनाव होते हैं। चुनावी वर्ष में प्रतिनिधि सभा की बैठक नागपुर में तथा शेष दो वर्षों में देश के अन्य स्थानों पर होती है।

भैया जी पुनः सरकार्यवाह – इस वर्ष पूरे देश में प्रतिनिधियों के साथ-साथ विभिन्न स्थानों पर संघचालक भी चुने गये थे। देश के ऐसे सभी प्रतिनिधियों को संघ के सरकार्यवाह का चयन करना था। प्रतिनिधि सभा ने गत १० मार्च को सर्वसम्मति से भैया जी जोशी को तीन वर्ष के लिये फिर से सरकार्यवाह चुन लिया। भैया जी का यह चौथा कार्यकाल होगा।

बासठ हजार स्थानों पर संघ का काम

पूरे देश के बासठ हजार नगर, कस्बों तथा गाँवों में इस समय संघ की दैनिक, साप्ताहिक या मासिक शाखा लगती है। प्रतिदिन लगने वाली शाखाएं साठ हजार हैं जो देश के 37 हजार 200 स्थानों पर लगती हैं। सत्रह हजार नगर, गाँवों में साप्ताहिक तथा आठ हजार पर मासिक शाखा है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने भारतीय भाषाओं के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी पारित किया।

तीन दिनों की बैठक में संगठन के विस्तार और प्रभाव में वृद्धि के प्रयासों पर भी चर्चा हुई। सम्पूर्ण देश के कोने-कोने से आये कार्यकर्ताओं ने अपने प्रश्नों का समाधान भी प्राप्त किया और सरसंघचालक का प्रेरक सम्बोधन भी सुना।

श्रद्धांजलि : सरकार्यवाह भैया जी जोशी ने प्रतिनिधि सभा की कार्यवाही प्रारम्भ होने के बाद सर्वप्रथम साल भर में दिवंगत हुए गणमान्य लोगों को श्रद्धांजलि दी। सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र में काल-कलवित हुए महानुभावों के साथ-साथ कलाकारों, पत्रकारों, शिक्षाविदों को भी श्रद्धा-सुमन अर्पित किये गये। देश की सुरक्षा में वीरगति को प्राप्त हुए जवानों, राजनैतिक हिंसा के शिकार बने कार्यकर्ताओं को भी प्रतिनिधि सभा ने आदरांजलि दी। पूज्य शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती जी, विदेशों में पहली शाखा शुरु करने वाले स्व.जगदीश सारडा जी, राष्ट्रीय चर्च आन्दोलन के प्रणेता जोसेफ पुनिक्कल, पत्रकार मुजफ्फर हुसैन, प्रसिद्ध गायिका श्रीमती गिरिजा देवी, ओडिशा के प्रसिद्ध लेखक चन्द्रशेखर रथ, आजाद हिन्द फौज के खुफिया विभाग की श्रीमती सरस्वती राजमणि तथा कांग्रेस के नेता प्रियरंजन दास मुंशी भी उन दिवंगत महानुभावों में थे जिन्हें प्रतिनिधि सभा ने मौन रह कर श्रद्धांजलि दी।

दो सौ गाँवों में भेद मिटे : सरकार्यवाह भैया जी जोशी ने संगठन की वर्ष भर की गतिविधियों के विवरण में बताया कि तेलंगाना प्रांत में स्वयंसेवकों ने सामाजिक समरसता के लिये उल्लेखनीय कार्य किया है। साधु-संतों एवं समाज के सहयोग से दो सौ गाँवों में

नये दायित्व

- **डा. मनमोहन वैद्य , श्री मुकुन्द जी** सह सरकार्यवाह (अब छः सह सरकार्यवाह)
- **श्री दुर्गादास जी** क्षेत्रीय प्रचारक एवं अ.भा.कार्यकारिणी के आमंत्रित सदस्य
- **श्री निम्बाराम जी,** सह क्षेत्र प्रचारक
- **डा. शैलेन्द्र जी,** प्रांत प्रचारक (जयपुर)
- **त्रिपुरा को नवीन प्रांत** बनाया गया है।

सभागार में बैठे प्रतिनिधि-गण

अ.भा.प्रतिनिधि सभा का प्रस्ताव

भारत की सभी भाषाओं का संरक्षण व संवर्द्धन हो

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह मत है कि भाषा किसी भी व्यक्ति एवं समाज की पहचान का एक महत्त्वपूर्ण घटक तथा उसकी संस्कृति की सजीव संवाहिका होती है। देश में प्रचलित विविध भाषाएँ व बोलियाँ हमारी संस्कृति, उदात्त परंपराओं, उत्कृष्ट ज्ञान एवं विपुल साहित्य को अक्षुण्ण बनाये रखने के साथ ही वैचारिक नवसृजन हेतु भी परम आवश्यक हैं। विविध भाषाओं में उपलब्ध लिखित साहित्य की अपेक्षा कई गुना अधिक ज्ञान गीतों, लोकोक्तियों तथा लोक कथाओं आदि की मौखिक परंपरा के रूप में होता है।

आज विविध भारतीय भाषाओं व बोलियों के चलन तथा उपयोग में आ रही कमी, उनके शब्दों का विलोपन व विदेशी भाषाओं के शब्दों से इनका प्रतिस्थापन एक गम्भीर चुनौती बन कर उभर रहा है। आज अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ विलुप्त हो चुकी हैं और कई अन्य का अस्तित्व संकट में है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह मानना है कि देश की विविध भाषाओं तथा बोलियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिये सरकारों, अन्य नीति निर्धारकों और स्वैच्छिक संगठनों सहित समस्त समाज को सभी सम्भव प्रयास करने चाहिये। इस हेतु निम्नांकित प्रयास विशेष रूप से करणीय हैं:-

१. देश भर में प्राथमिक शिक्षण मातृभाषा या अन्य किसी भारतीय भाषा में ही होना चाहिये। इस हेतु अभिभावक अपना मानस बनायें तथा सरकारें इस दिशा में उचित नीतियों का निर्माण कर आवश्यक प्रावधान करें।

२. तकनीकी और आयुर्विज्ञान सहित उच्च शिक्षा के स्तर पर सभी संकायों में शिक्षण, पाठ्य सामग्री तथा परीक्षा का विकल्प भारतीय भाषाओं में भी सुलभ कराया जाना आवश्यक है।

३. राष्ट्रीय पात्रता व प्रवेश परीक्षा (नीट) एवं संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षाएँ भारतीय भाषाओं में भी लेनी प्रारम्भ की गयी हैं, यह पहल स्वागत योग्य है। इसके साथ ही अन्य प्रवेश एवं प्रतियोगी परीक्षाएँ, जो अभी भारतीय भाषाओं में आयोजित नहीं की जा रही हैं, उनमें भी यह विकल्प सुलभ कराया जाना चाहिये।

४. सभी शासकीय तथा न्यायिक कार्यों में भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिये। इसके साथ ही शासकीय व निजी क्षेत्रों में नियुक्तियों, पदोन्नतियों तथा सभी प्रकार के कामकाज में अंग्रेजी भाषा की प्राथमिकता न रखते हुये भारतीय भाषाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिये।

५. स्वयंसेवकों सहित समस्त समाज को अपने पारिवारिक जीवन में वार्तालाप तथा दैनन्दिन व्यवहार में मातृभाषा को प्राथमिकता देनी चाहिये। इन भाषाओं तथा बोलियों के साहित्य-संग्रह व पठन-पाठन की परम्परा का विकास होना चाहिये। साथ ही इनके नाटकों, संगीत, लोककलाओं आदि को भी प्रोत्साहन देना चाहिये।

६. पारंपरिक रूप से भारत में भाषाएँ समाज को जोड़ने का साधन रही हैं। अतः सभी को अपनी मातृभाषा का स्वाभिमान रखते हुए अन्य सभी भाषाओं के प्रति सम्मान का भाव रखना चाहिये।

७. केन्द्र व राज्य सरकारों को सभी भारतीय भाषाओं, बोलियों तथा लिपियों के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु प्रभावी प्रयास करने चाहिये।

अ. भा. प्रतिनिधि सभा बहुविध ज्ञान को अर्जित करने हेतु विश्व की विभिन्न भाषाओं को सीखने की समर्थक है। लेकिन, प्रतिनिधि सभा भारत जैसे बहुभाषी देश में हमारी संस्कृति की संवाहिका, सभी भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन को परम आवश्यक मानती है। प्रतिनिधि सभा सरकारों, स्वैच्छिक संगठनों, जनसंचार माध्यमों, पंथ-संप्रदायों के संगठनों, शिक्षण संस्थाओं तथा प्रबुद्धवर्ग सहित संपूर्ण समाज से आवाहन करती है कि हमारे दैनन्दिन जीवन में भारतीय भाषाओं के उपयोग एवं उनके व्याकरण, शब्द चयन और लिपि में परिशुद्धता सुनिश्चित करते हुये उनके संवर्द्धन का हर सम्भव प्रयास करें।

एक श्मशान, एक मंदिर तथा कुएं का प्रयोग होने लगा है। इन गाँवों में ऊँच-नीच का भाव पूरी तरह समाप्त हो गया है।

इसी प्रकार गो-सेवा के अभियान में लगे कार्यकर्ताओं ने **बीस हजार किसानों** को जैविक कृषि का प्रशिक्षण दिया है। पन्द्रह सौ गोशालाओं में देशी गायों के संरक्षण के साथ-साथ पंचगव्य चिकित्सा तथा दूध, घी, दही, गोमय और गोमूत्र से कई प्रकार की दवाइयाँ तथा अन्य चीजें बनाने को भी बढ़ावा दिया जा रहा है।

भैया जी जोशी ने बताया कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्वयंसेवक समाज जागरण के लिये विशेष प्रयास कर रहे हैं।

बंगाल में रामनवमी के अवसर पर लगभग तीन सौ नगरों व कस्बों में शोभायात्राएं निकाली गईं। स्वामी विवेकानन्द के शिकागो भाषण के सवा सौ साल होने पर साइकिल और मोटर साइकिल यात्राएं निकाली गईं जिनमें ७५ हजार नौजवानों ने भाग लिया। गोहाटी में गत २१ जनवरी को पैंतीस हजार स्वंयसेवकों का विशाल एकत्रीकरण हुआ। इसमें गोहाटी की पैंतीस हजार जनता भी आई। सितम्बर में त्रिपुरा की राजधानी अगरतला में विराट हिन्दू-सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें २६ हजार लोगों ने भागीदारी की। ❑

तन और मन की शुद्धि है स्नान

सोकर उठने तथा शौच से निवृत्त होने के पश्चात् प्रतिदिन स्नान करना हमारे संस्कारों में है। विश्व के अन्य देशों की तुलना में केवल भारत में ही स्नान की संकल्पना आंरभ हुई। सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रमों के पहले स्नान करना, यह भारत की ही विशेषता है। यह श्रद्धा भी भारत में ही है कि नदियां पवित्र हैं, तीर्थक्षेत्र पवित्र हैं और उनमें स्नान कर पवित्र होना चाहिये। इसी कारण हमारे कुंभ मेले इन पवित्र नदियों के तट पर लगते हैं। स्नान के समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

- स्नान हर दिन करना चाहिये। अस्वस्थ होने की अवस्था में स्नान को टाल सकते हैं।
- ठंडे पानी से स्नान करना अधिक लाभप्रद माना गया है। फिर भी ऋतु तथा वातावरण के अनुसार गर्म व ठंडा (सामान्य) पानी मिलाकर शरीर के तापमान के अनुसार स्नान करना चाहिए।
- स्नान करते समय पानी से क्रमशः पैरों, पिंडलियों, जंघाओं, सीना-पीठ धोऐं बाद में सिर पर पानी डालें। ठंडा पानी विशेषकर सर्दियों में सर्वप्रथम सिर पर डालना हानिकारक हो सकता है।
- स्नान करते समय पवित्र नदियों का स्मरण करना चाहिये तथा निम्न श्लोक दोहराना चाहिये-

  गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
  नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधिम् कुरु।।

  श्लोक का अर्थ-हे गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी आदि सभी नदियों! आप सभी इस जल में समाहित हो जाइए।
- पैरों के तलुए, घुटनों के पीछे का भाग, जंघा, कांखें, गर्दन इत्यादि को रगड़-रगड़ कर धोना चाहिए।
- यथासंभव साबुन-शेम्पू (इनमें रसायनों का प्रयोग होता है) का उपयोग कम से कम करें। इनके स्थान पर शिकाकाई चूर्ण, बेसन (चने का आटा), रीठा, कस्तूरी, हल्दी आदि वस्तुओं का उपयोग स्वास्थ्यप्रद है। इन वस्तुओं के प्रयोग से शरीर की कांति बढ़ती है तथा शरीर (चमड़ी) पर कोई विपरीत (हानिकारक) प्रभाव भी नहीं पड़ता।

मन का स्नान

- स्नान का अर्थ है शरीर की शुद्धि। हमारे शास्त्रों में स्थूल-देह (शरीर जो दिख रहा है) के अलावा सूक्ष्म शरीर के अस्तित्व को भी बताया गया है। सूक्ष्म-शरीर के विभिन्न भागों में मन को सर्वाधिक प्रभावशाली माना गया है। हमारे अच्छे-बुरे विचार, वासनायें, इच्छाऐं मन में ही उत्पन्न होती हैं। यदि समय रहते उनका शमन न किया जाए तो बलवती होकर मनुष्य का स्वभाव (प्रवृत्ति) ही बना देती है।

अतः मन की शुद्धि (आत्म नियमन) के बिना हमारा स्नान अधूरा रहेगा। मन के नियमन द्वारा ही हम सत्व गुणों का विकास करते हुए दैवीय स्वभाव को पा सकते हैं। ❑

आरोग्य का खजाना नीम

नीम एक उपयोगी वृक्ष है जो कि पर्यावरण के अनुकूल है और भारत में बहुतायत में पाया जाता है। इसका स्वाद तो कड़वा होता है लेकिन इसके फायदे अनेक और प्रभावशाली हैं। इसकी जड़ से लेकर फूल-पत्ती और फल तक सभी अवयव औषधीय गुणों से भरे-पूरे हैं। नीम को हमारे देश में 'गाँव का दवाखाना' भी कहा जाता है। नीम को संस्कृत में 'अरिष्ट' कहा जाता है जिसका अर्थ होता है श्रेष्ठ , पूर्ण, और कभी खराब न होने वाला। आइये इसके गुणों को देखकर उनसे लाभ उठायें।

- नीम की बाहरी छाल को पानी में घिसकर फोड़े-फुंसियों पर लगाने से वे बहुत जल्दी ठीक होते हैं।
- नीम की छाल को सुखाकर एवं जलाकर उसकी राख में २०-२५ तुलसी के पत्तों का रस मिलाकर लगाने से दाद ठीक हो जाता है।
- छाया में सुखाई गई नीम की छाल को जला कर राख बना लें। तत्पश्चात् कपड़छान करके उसमें दो गुना पिसा हुआ सेंधा नमक मिला लें। रोज इस चूर्ण का मंजन करने से पायरिया रोग में लाभ होता है तथा मुँह की बदबू, मसूढ़ों व दाँतों का दर्द भी दूर होता है।
- प्रतिदिन नीम की दातौन करने से मुँह की बदबू दूर होती है। दाँत और मसूढ़े मजबूत होते हैं। मसूढ़ों से खून आना तथा मसूढ़ों की सूजन के उपचार के लिये नीम की दातौन बहुत उपयोगी है।
- चैत्र मास में नीम की कोमल नयी कोपलों को दस-पन्द्रह दिन तक प्रातःकाल चबाकर खाने से रक्त शुद्ध होता है। ऐसा करने से फोड़ें-फुंसी नहीं निकलते और किसी भी प्रकार का बुखार नहीं आता है।
- नीम की पत्तियों को आवश्यकतानुसार पीस लें। अब इसमें आधा चम्मच पिसा हुआ अजवायन तथा थोड़ा गुड़ मिलाकर छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें। दो-दो गोली कुछ दिन तक निरन्तर लेने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं।
- नीम की ताजा पत्तियों को पानी में उबालकर घाव धोने से जल्दी ठीक होता है।
- नीम की पत्तियों के दो चम्मच रस में दो चम्मच शहद मिलाकर प्रातःकाल लेने से पीलिया रोग में लाभ होता है।

अन्य लाभ

- नीम की पत्तियों का एक छोटा चम्मच रस लेकर उसमें थोड़ी पिसी हुई मिस्री मिलाकर पीने से पेचिश में लाभ होता है।
- नीम की ताजा पत्तियों को अनाज में मिलाकर रखने से उसमें कीड़े (घुन, ईली तथा खपरा) नहीं लगते।
- गर्म कपड़े, कालीन, कम्बल, पुस्तकों आदि को कीड़ों से बचाने के लिये इनमें नीम की ताजा पत्तियाँ रखनी चाहिये।
- नीम की पत्तियों की खाद पेड़-पौधों को पोषक-तत्व प्रदान करती है तथा जमीन में लगी दीपक को भी खत्म करती है। ❑

छात्र यूनियन के नेता ने माँग की कि राष्ट्रपति माफी माँगें

अपने देश के कुछ विश्वविद्यालय ऐसे हैं जहाँ राष्ट्र-द्रोह, जिहाद, साम्प्रदायिकता और अराजकता के पाठ पढ़ाये जाते हैं। दिल्ली का जनेवि, अलीगढ़ मुस्लिम विवि, जाधवपुर वि.वि.(बंगाल),जामिया मिलिया आदि ऐसे ही शिक्षण संस्थान है जो पूरे देश में कुख्यात हो रहे हैं। ये स्वायत्तशायी विवि जनता के टैक्स के पैसे से ही चलते हैं।

अलीगढ़ मु.विवि में गत ७ मार्च को दीक्षान्त समारोह हुआ, जिसमें देश के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द को बुलाया गया था। इसी के साथ विवि के जिहादी सक्रिय हो गये। पहले तो छात्र संघ ने राष्ट्रपति महोदय को बुलाने का विरोध किया। फिर छात्र संघ अध्यक्ष ने घोषणा की, कि कोई 'संघी' राष्ट्रपति के साथ आया तो उसे घुसने नहीं दिया जायेगा। २८ फर. को छात्र संघ के उपाध्यक्ष सज्जाद राठर ने माँग की कि पहले राष्ट्रपति मुसलमानों से माफी माँगे, तभी उनको दीक्षांत समारोह में आने दिया जायेगा। सज्जाद कश्मीर घाटी का रहने वाला है।

वर्ष २०१० में श्री रामनाथ कोविंद ने कहा था कि इस्लाम और ईसाइयत भारत में जन्मे मजहब नहीं है। इसी को जिहादियों ने बहाना बनाया है। पर एक छुटभैये नेता का इतना दुस्साहस कि वह देश के राष्ट्रपति को धमकाये? सेकुलरवाद के ही ये विषैले फल हैं जो जिहादी लोग राष्ट्रपति का अपमान कर रहे हैं।

कामरेडों को वोट नहीं दिया तो ससुर- जेठ ने मार दिया

त्रिपुरा में वाममार्गियों का आतंक कितनी भयावह स्थिति में था इसका ताजा उदाहरण गत दिनों त्रिपुरा चुनाव के परिणाम आने के बाद दिखा।

बीती १८ फरवरी को त्रिपुरा में चुनाव हुये। इन चुनावों का परिणाम ३ मार्च को आया। प्रत्येक चुनाव में त्रिपुरा के कामरेड हिंसा, मार-धाड़ का सहारा लेते रहे हैं। इस बार भी उन्होंने इसकी पूरी कोशिश की। कहीं चुनाव से पहले, कहीं मतदान के समय और कहीं मतदान के बाद।

उत्तरी त्रिपुरा जिले के नलकटा स्थान की रहने वाली एक महिला की उसके ससुर और जेठ ने मिलकर लाठियों से पीट-पीट कर हत्या कर दी। उस महिला का दोष केवल इतना ही था कि उसने अपनी मर्जी से विधान सभा चुनाव में वाममार्गियों के स्थान पर भाजपा को वोट दिया। आप अनुमान लगा सकते हैं कि आम जनता वाममार्गियों के आतंक से कितनी त्रस्त रही होगी।

अफसरों की मिली भगत से जम्मू में बस गये रोहिंग्या

अभी कुछ दिनों पहले जम्मू के सुजवाँ में आतंकी हमला हुआ था। यह क्षेत्र जम्मू का आवासीय क्षेत्र है। यहाँ पर रोहिंग्याओं ने भी छोटी-छोटी बस्तियाँ बना रखी हैं। म्यांमार से भागे ये जिहादी जम्मू में कैसे स्थानी रूप में बस गये?

असल में सरकारी अफसरों की मिली भगत ने उन्हें वहाँ स्थायी रूप से बसाया है। इतना ही नहीं इन रोहिंग्याओं ने अपने-अपने राशन कार्ड, आधार कार्ड तथा मतदाता पहचान पत्र भी बनवा लिये हैं और उनका सरकारी सुविधायें प्राप्त करने में जमकर उपयोग भी कर रहे हैं।

इनका एक मात्र उद्देश्य जम्मू को भी मुस्लिम बहुल क्षेत्र बनाना है। सुजवाँ में जो आतंकी हमला हुआ उसके आस-पास रोहिंग्याओं की बस्ती का होना सुरक्षा को एक चुनौती है।

मस्जिद की रक्षा कर रहा था फिर भी आतंकियों ने गोली मार दी

गत २५ फर. को आतंकियों ने कश्मीर की प्रसिद्ध चरारे-शरीफ मस्जिद पर हमला किया। गोलीबारी में राज्य पुलिस का एक जवान कांस्टेबल कुलतार सिंह शहीद हो गया। कुलतार सिंह उस समय मस्जिद की सुरक्षा में तैनात थे। फिर भी आतंकियों ने उन्हें गोली मार दी और उनकी राइफल लूट कर ले गये। श्रीनगर में भी सुरक्षा में तैनात पुलिस के एक जवान फारूक अहमद को आतंकियों ने गोली मार दी। उसकी बन्दूक भी आतंकी ले गये। उधर जम्मू की सुजवाँ छावनी पर जनता में छिपे जिहादियों ने पत्थर फैंके। अर्द्धसैनिक बलों के इस छावनी पर कुछ दिनों पूर्व आतंकी हमला भी हुआ था।

एक लाख करोड़ मिलेंगे शत्रु सम्पत्ति से

केन्द्र सरकार ने देश में स्थित शत्रु सम्पत्ति को नीलाम करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। आजादी के बाद जो लोग भारत छोड़कर पाकिस्तान और चीन में स्थायी रूप से बस गये, ऐसे लोगों की बहुत सी सम्पत्ति भारत में बहुत समय से है। उसको भारत सरकार ने शत्रु सम्पत्ति घोषित कर उसे नीलाम करने का फैसला लिया है।

वर्षों से यह मामला कांग्रेस की तुष्टीकरण नीति के कारण लटका हुआ था। देश में यह सम्पित्त एक लाख करोड़ रूपये से अधिक की है। सार्वजनिक नीलामी में प्राप्त आय को राष्ट्र के विकास में खर्च करने का निर्णय भी लिया गया है।

वैज्ञानिकों ने बनाई कैंसर की दवा

बंगाल के एक वैज्ञानिक दल ने गत दिनों कैंसर रोग की दवा खोज कर सभी रोगियों को एक बड़ी राहत दी है। कैंसर जैसी गम्भीर बीमारी पर बहुत समय से शोध हो रहे हैं। इसी दिशा में बंगाल के वैज्ञानिक दल ने कैंसर की नई दवा खोजी है।

चिकित्सा वैज्ञानिक डा.शुभाशीष राय की टीम ने एक विशेष प्रकार के समुद्री घोंघे से यह दवा तैयार की है। दवा का अन्य जीवों पर सफलतापूर्वक परीक्षण करने के बाद उन्होंने इसका पेटेंट भी करवा लिया है। दस वर्षों के अथक परिश्रम और लगन से बंगाल के वैज्ञानिकों को यह सफलता मिली है।

तीन दिवसीय विज्ञान महोत्सव आयोजित

गत २६,२७ व २८ फरवरी को जयपुर में तीन दिवसीय राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव का आयोजन हुआ। यह कार्यक्रम स्थानीय मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के परिसर में रखा गया था। विज्ञान भारती तथा एम.एन.आई.टी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस मेले में 'विज्ञान के मिथकों और चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्याओं' जैसे अनेक विषयों पर प्रबुद्ध लोगों के भाषण हुये।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जोधपुर आई.आई.टी.के निदेशक डा. सी.वी.आर मूर्ति थे। उन्होंने कहा कि हमें देश में तकनीकी क्षेत्र को और विकसित करना होगा तथा शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में और अधिक निखार लाना होगा तभी देश विज्ञान के साथ–साथ तकनीकी क्षेत्र में भी विकास करेगा।

इस अवसर पर विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री जयन्त सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि देश का युवा स्वावलम्बी बने इसके लिए विज्ञान भारती सदैव प्रयासरत है।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर विज्ञान के विभिन्न मॉडलों, विज्ञान पर आधारित नाटक, प्रश्नोत्तरी, चित्रकथा जैसी प्रतियोगिताओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन राष्ट्रीय विज्ञान दिवस (२८ फरवरी) के अवसर पर किया गया था।

प्रदेश भामस का २३ वां वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

गत २४ व २५ फरवरी को जोधपुर में लाल सागर स्थित हनुमंत आदर्श विद्या मन्दिर में भारतीय मजदूर संघ का २३ वाँ वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ ।

मजदूर संघ का यह अधिवेशन प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार होता है। अधिवेशन का शुभारम्भ केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री श्री गजेन्द्र सिंह ने किया।

अधिवेशन में राजस्थान के आठ सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसी दौरान आगामी तीन वर्षों के लिए भारतीय मजदूर संघ की प्रदेश कार्यकारिणी का चुनाव भी हुआ। इसमें श्री बिशन सिंह पंवार अध्यक्ष, श्री दीनानाथ महामंत्री, श्री हरिमोहन शर्मा संगठन मंत्री तथा श्री राधेश्याम माटोलिया को कोषाध्यक्ष चुना गया।

संस्कृत भारती का अष्टावधान कार्यक्रम

पुरातन विधाओं में से अनेक विधा विलुप्त होने के कगार पर हैं। इसमें एक 'अष्टावधान' भी है। इस में काव्य रचना के दौरान रचनाकार को आठ व्यवधानों (आठ प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देते हुये) का समाधान निकालते हुए काव्य रचना करनी होती है।

इसी को लेकर गत ३ मार्च को संस्कृत भारती की जयपुर इकाई ने अष्टावधान कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम मानसरोवर स्थित होटल प्रिंस में रखा गया था। कार्यक्रम में आंध्रप्रदेश के विद्वान श्री दोर्बल प्रसाद शास्त्री ने विभिन्न साहित्यिक बाधाएं उत्पन्न करने के बाद काव्य रचना कर भारत की इस समृद्ध परम्परा से उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया।

राजस्थान में इस प्रकार का यह पहला आयोजन था। संस्कृत भारती से जुड़े अनेक कार्यकर्ता बड़ी संख्या में इस अवसर पर उपस्थित थे।

होली स्नेह मिलन समारोह

गत १० मार्च को पाथेय कण संस्थान की ओर से 'होली स्नेह मिलन समारोह' आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम पाथेय कण के 'पत्रकार परिषद कक्ष' में रखा गया था। कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य लोगों ने होली के गीतों और नृत्य का भरपूर आनंद लिया। इस अवसर पर प्रसिद्ध चंग कलाकार श्री केसर सिंह ने मनमोहक प्रस्तुतियाँ देकर सभी श्रोताओं का मन मोह लिया।

राजस्थान परिषद का कवि सम्मेलन

गत ३ मार्च को राजस्थान परिषद, कोलकाता द्वारा होली के अवसर पर एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम स्थानीय ओसवाल भवन में रखा गया था।

किसान संघ कार्यालय का भूमि पूजन

गत ४ मार्च को भारतीय किसान संघ के नई दिल्ली स्थित दीनदयाल उपाध्याय मार्ग पर बनने वाले नवीन कार्यालय का भूमि पूजन हुआ। बांसवाड़ा के पूज्य संत श्री उत्तम स्वामी जी महाराज के कर–कमलों से यह पूजन सम्पन्न हुआ।

कागजी मदरसे करोड़ों की चपत लगा रहे थे

अभी कुछ दिनों पहले उत्तर प्रदेश की सरकार ने राज्य के सभी मदरसों का पंजीकरण अनिवार्य कर दिया। जब पंजीकरण होना प्रारम्भ हुआ तो पता चला कि दो हजार से अधिक मदरसे ऐसे थे जो केवल कागजों में ही चल रहे थे।

इन सब मदरसों को राज्य सरकार हर साल काफी पैसा देती थी। कागजी मदरसे भी राज्य की जनता को सौ करोड़ का चूना लगा रहे थे। पंजीकरण होने से वास्तविकता सामने आ गई और प्रदेश की जनता के सौ करोड़ रुपये बच गये।

Call for Papers (6th Issue)
JONER
(Journal of North East Region) Impact Factor: 3.146
Annual multidisciplinary UGC approved and indexed research journal **(ISSN 2321-0583)** We welcome original research based papers from social sciences, literature and humanities. Paper should be submitted through e-mail only at: **Jonerbu@gmail.com,** Last Date: **31st March 2018**
Month of Publication: May 2018
Publication fee: Rs. 1500/- (to be paid after acceptance of paper by Review Board/Editorial Board; No fee for foreign authors)
With Regards- **Editor, JONER, Deptt. of political Science Bodoland University,Kokrajhar-783370, Assam (India)**
Ph. No. 8720904042, For details visit: www.joner.in

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

ईरान में जिनकी समाधि पर मेला लगता है, ऐसे क्रांतिकारी

सूफी अम्बा प्रसाद

२३ मार्च

(१८५८-१९१५)

समाज में सामर्थ्य उत्पन्न करने वाले सन्यासी

समर्थ गुरु रामदास

चैत्र शु.९ (२५ मार्च)

(१६०८-१६८२)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नीव बनने वाले

अप्पा जी जोशी

३० मार्च

(१८९७-१९७९)

हिन्दी साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में नये प्रतिमान स्थापित करने वाले राष्ट्रकवि

माखन लाल चतुर्वेदी

४ अप्रेल

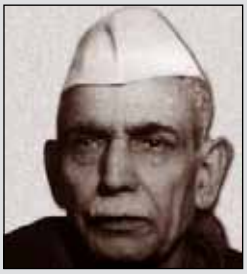

(१८८९-१९६८)

पक्ष का विचार

वनवासी बन्धु असभ्य एवं पिछड़े नहीं हैं। वे भारत के विकास की रीढ़ हैं। उनकी उन्नति के बिना राष्ट्र का विकास अपूर्ण है। वनवासी जगेगा तो देश जगेगा।

- श्री कु.सी.सुदर्शन (पूर्व सरसंघचालक)

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी - अशोक वाटिका, राधा, कम्पूचिया (कम्बोदिया), दामोदर कुण्ड-नेपाल, सत्ताईस, शतपथ ब्राह्मण, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, बिठूर, कल्ला जी राठौड़, तोसिको बोस

बाल प्रश्नोत्तरी १.अ, २.ब, ३.द, ४.अ, ५.स, ६. ब,७. अ, ८.स, ९.ब,१०.द

जयपुर में घुटना दर्द निवारण शिविर का आयोजन

दिनांक 29-30 मार्च 2018

महाराजा अग्रसेन नी-केयर जयपुर द्वारा पीएनआर सोसाइटी भावनगर गुजरात के सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ.विजय नायक (विश्व प्रसिद्ध अतिविशेषज्ञ प्रोस्थेटिक एवं ओरथोटिक्स) का बिना ऑपरेशन घुटना दर्द निवारण दो दिवसीय शिविर जयपुर में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में घुटनों के दर्द का इलाज **'पोली सेन्ट्रिक नी-ब्रेस'** विधि से किया जायेगा। डॉ. नायक ने घुटनों के दर्द के लिए पोली सेन्ट्रिक नी-ब्रेस नामक एक यंत्र बनाया है। इस नी-ब्रेस को घुटनों पर आसानी से बाहर से लगाया जाता है। इसके लगाने से दर्द धीरे-धीरे कम होने लगता है और व्यक्ति पहले की तरह चलने-फिरने लगता है। यह काफी सस्ता भी है। इसके उपयोग से व्यक्ति जटिल घुटना प्रत्यारोपण ऑपरेशन से बच सकता है। इसी प्रकार यह कैम्प पूरे भारत के मुख्य शहरों (राजस्थान में केवल जयपुर) में वर्ष 1999 से लगातार लगाया जाता रहा है।

कैम्प की पूरी जानकारी ध्यान से पढ़ें

- dEi fnukd 29 o 30 ekpl को लगेगा।
  समय प्रातः 10 से 1.30 सायं 3.30 से 5.30 बजे।
- पुराने मरीज दिनांक 30 मार्च को सायं 3.30 से 5.30 बजे तक।
- कैम्प का स्थान : feRry ijkMkblt] A-20 yky cgknj uxj] QkVlt gkfLiVy dk ikl t,y,u ekxl] t;ij
- jftLVs'ku 'kYd %& 100/-रूपये। (NOT Refundable) 9461051932 पर Paytm कर सकते हैं।
- परामर्श के समय Latest X-ray (knee joint AP & Lateral) दोनों घुटनों का साथ लायें।
- सहयोग राशि (पॉली सेन्ट्रिक नी-ब्रेस) दोनों घुटनों की 7000/- रूपये मात्र

अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु :- 8094506952, 9461051932

श्री गुरुजी छात्रावास

उच्च माध्यमिक आदर्श विद्या मन्दिर

राजापार्क,जयपुर

आवश्यकता है

पद - छात्रावास प्रभारी (पुरुष)

योग्यता - स्नातक

वेतन - 12,000/- रु. मासिक

विशेष - (1) खिलाड़ी, संघ कार्यकर्ता तथा पूर्व सैनिक को वरीयता। (2) कक्षा 10वीं तक गणित, अंग्रेजी अथवा विज्ञान विषय पढ़ाने में सक्षम को वेतन अधिक भी दिया जा सकता है। (3) भोजन-आवास निःशुल्क।

पद - चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (पुरुष)

आवेदन की अंतिम तिथि- 15 अप्रेल 2018

-:आवेदन भेजने का पताः-

श्री गुरुजी छात्रावास कार्यालय

आदर्श विद्या मंदिर, राजापार्क, जयपुर-04(राज.)

सम्पर्क सूत्र - (रामानंद चौधरी) 9799394656

Email: shrigurujihostel@gmail.com

भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक

अंक संदर्भ– १६ जनवरी व १ फरवरी २०१८

देशभक्त अजीजनबाई

जनवरी द्वितीय अंक में देशभक्त अजीजनबाई के विषय में पढ़ा। हमारे देश की महिलाएं देशभक्ति में पुरुषों से किसी प्रकार कम नहीं रही। अजीजनबाई की राष्ट्रभक्ति हम सभी के लिए प्रेरणादायी है।

-प्रभुसिंह राणावत, *साण्डेराव,पाली*

नवीन जानकारी

अंक में दो अद्भुत जानकारी मिलीं। पहली आस्ट्रिया के ग्राज की हर गली में योग केन्द्र तथा दूसरी सोमनाथ का बाण स्तम्भ जो दक्षिणी ध्रुव की दिशा बताता है।

-ओमप्रकाश कुमावत, *दुल्हेपुरा, भीलवाड़ा*

भारतीय संस्कृति से प्रभावित मारिया सिंश्निग द्वारा आस्ट्रिया में योग केन्द्रों की स्थापना का समाचार हर्षित करने वाला है।

-श्यामलाल लखारा, *बावड़ी, जोधपुर*

स्वास्थ्यवर्धक दोहे

अंक में प्रकाशित स्वास्थ्यवर्धक दोहे बहुत अच्छे लगे। इनका उपयोग शरीर को स्वस्थ रखने में मददगार साबित होगा।

-कैलाश जोशी, *मनोहरपुरा (अजमेर)*

सामयिक लेख

महाराष्ट्र हिंसा पर अंक में पढ़ा। इस प्रकार का घटनाक्रम समाज को बांटने का एक षड़यंत्र है। राष्ट्र विरोधी मनसूबों को पहचानकर उन्हें तत्काल समाप्त किये जाने की आवश्यकता है ताकि सामाजिक समरसता का तानाबाना छिन्न-भिन्न न होने पाए।

-दयावर्धनी, *सिकन्दराबाद (हैदराबाद)*

भगवान बाहुबली

फरवरी प्रथम अंक में प्रकाशित आमुख कथा मेरी ज्ञान पिपासा को शांत करने में बड़ी सहायक सिद्ध हुई। ऐसे भव्य आयोजन हमारे देश की सांस्कृतिक एकता को मजबूती प्रदान करते हैं।

-देवकीनन्दन शर्मा, *भगेगा, सीकर*

राष्ट्रविरोधी अभियान

अंक में प्रकाशित 'भारत और कश्मीर अलग-अलग हैं कश्मीर के सरकारी स्कूल में' समाचार पढ़कर बहुत आश्चर्य हुआ। केन्द्र सरकार को शीघ्रता से कड़ा कदम उठाना चाहिए।

-हुकमचन्द चौधरी , *सपोटरा, करौली*

संस्कारित करती बालकथा

बाल जगत स्तम्भ में प्रकाशित 'समय अनमोल है' कथा जीवनोपयोगी एवं संस्कार उत्पन्न करने वाली है। यदि बालपन में ही समय के सदुपयोग के संस्कार पड़ जाये तो जीवन में सफलता अवश्य मिलती है।

-टेकचन्द शर्मा, *झुंझुनू*

महान क्रांतिकारी फूंगलो

पूर्वांचल के महान क्रांतिकारी शम्भुधन फूंगलो का प्रेरणादायी जीवन पढ़ने को मिला। मात्र ३३ वर्ष की आयु में ही मातृभूमि के लिए प्राणों की आहूति देकर यह क्रांतिकारी अमर हो गया।

-गोविन्द सिंह राठौड़, *रानीखुर्द (पाली)*

क्रांतिकारी शम्भुधन फूंगलो का प्रसंग पढ़ा। ऐसे प्रसंग युवा पीढ़ी के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं।

-ईश्वरलाल धाकड़, *लक्ष्मीपुरा, (चित्तौड़गढ़)*

वीर सावरकर

पाथेय कण में प्रकाशित चित्रकथा अत्यंत सुन्दर एवं प्रभावकारी है। इसे पढ़कर कुछ करने की प्रेरणा मिलती है।

-राकेश सैनी, *विराटनगर,जयपुर*

अंक में प्रकाशित चित्रकथा वीर सावरकर बड़ी ही प्रेरणादायी है। राष्ट्रनायकों के जीवन से परिचय कराने का यह अच्छा माध्यम है।

-जितेन्द्र सैनी, *काँवट(सीकर)*

परिवार का महत्व

संस्कार स्तम्भ में परिवार के साथ रहने के लाभ पढ़े। परिवार में रहकर सामूहिकता का संस्कार पैदा होता है। आज की भागदौड़ वाली जिन्दगी में परिवार हमें तनावमुक्त, सहज तथा सुरक्षित जीवन जीना सिखाता है।

-अनिल चौधरी, *सोडाला, जयपुर*

ज्ञानवर्द्धक प्रश्नोत्तरी

अंक में प्रकाशित प्रश्नोत्तरियाँ ज्ञानवर्द्धक और रुचिकर होती हैं। बच्चों के सामान्य ज्ञान की बढ़ोतरी में इन प्रश्नों का अमूल्य योगदान रहता है।

- पुष्पा जांगिड़, *सांगानेर, जयपुर*

साभार – द हिन्दू

उत्तर महापुरुष पहचानो - आदि शंकराचार्य

विज्ञापन

विज्ञापन